# ध्रुव-प्रकाश

## मैथिली कविता संग्रह

मधेशी लेल सबमे एहास ।
सेवा, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य ।।
न्यायमे बराबर चाही कि ।
मधेशके विर सिपाही छि ।।

-ध्रुव-प्रकाश

मैथिली साहित्य परिषद सब्बी
उपहार स्वरूप
प्रदान।

परम् कृपेय बाबा स्व छठ्ठुलाल मण्डल
आ मैयाँ स्व सगुनियाँ देवी क
स्मृतीमें, यादास्तमें

# दुई शब्द

कवितात्मक शैलीमें लिखित प्रस्तुत पुस्तकमे सदियौसँ शोषित, पिडित, दमित मधेशी समुदायक उपर जाही प्रकारक कुठाराघात भेल अछि ताहिक प्रतिनिधित्व करैत राज्यक हरेक तह तप्कामें मधेशी समुदायक प्रतिनिधित्वक लेल क्रान्तिकारी भाव प्रष्ट करक प्रयास कयल गेल अछि । हम मधेशी नेपालक आधा भाग आ आधा जनसंख्या भेलाक बावजुद जे शासन सत्तासँ बंचित छि ओहिक विरोध करैत हम मधेशीक शासन सत्तामें आधा फाँट घर हमर मालकियत सेहो हमर होवाक चाही । ताहि हेतु एहि पुस्तकक माध्यमसँ अपन घरमें भेल कुठाराघात प्रति सचेत, सजग आ उठवाक आग्रह करैत एक बेर फेर अधिकारक लेल आ माँ मधेशक स्वाभिमान आ अपन आत्मसम्मानक लेल संर्घषक भाव समेटवाक प्रयास कएल गेल अछि ।

*- कवि*

# आर्शिवाद

बाबु - नागेश्वर मण्डल

पापा - युगेश्वर मण्डल

काका - विशेश्वर मण्डल आ अनिल

प्रकाशक - आकास आ विकास

कम्प्युटर - देवेन्द्र प्रसाद साह

जितेन्द्र कुमार यादव

# मधेशी राज

○ प्रकाश

नै चाही हमरा सामें पचास ।
हमरा चाही जनक विराट ।।
दीनाभद्री, सलहेसक राज ।
मधेशीया चाहै मधेशी राज ।।

नेपालके भाग(वण्डा हौ ।
मधेशक एकटा झण्डा हौ ।।
झण्डामें एकटा निसान हौ ।
खेत, खलिहान, किसान हौ ।।

मधेश एकटा प्रान्त हौ ।
पहाडी तन्त्र अन्त हौ ।।
मधेशीयाके शासन हौ ।
मधेशीयाक प्रशासन हौ ।।

मधेशी लिखल संविधान हौ ।
हक, अधिकार समान हौ ।।
भाषा-भेष पहिचान हौ ।
आत्म निर्णय, आत्मसम्मान हौ ।।

मधेशी सेना, सरकार हौ ।
अलगसे कारोवार हौ ।।
समावेशी गणराज हौ ।
मात्र मधेशीक आवाज हौ ।।

मधेशक एकटा गीत हौ ।
कला, संस्कृति, साहित्य हौ ।।
मधेशी प्रज्ञा प्रतिष्ठान हौ ।
साहित्यकारोक सम्मान हौ ।।

# मधेशके बिर सिपाही छि

○ ध्रुव

हम मधेशी, हमर मधेश ।
हमर प्रान्त, हमर प्रदेश ।।
जब मातृभूमि तराई कि ।
मधेशके विर सिपाही छि ।।

जातपात, बहु भाषा-भाषी ।
वास एक, फुल भांती भांती ।।
हम हिन्दु, मुस्लिम भाइ छि ।
मधेशक विर सिपाही छि ।।

नेपाल हमर ई साझा छि ।
तैं त सबमे आधा चाहै छि ।।
आ नहि त मचत तवाहि कि ।
मधेशके विर सिपाही छि ।।

बहुत भेल कुठाराघात ।
आव नहि करव हम वर्दास्त ।।
अन्तिम लडव लडाइ कि ।
मधेशके विर सिपाही छि ।।

मधेशी सेत सयमें पचास ।
सेवा, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य ।।
न्यायमें बराबर चाहि कि ।
मधेशके विर सिपाही छि ।।

हमर घर, मालिक हम ।
फिर्ता करु आव सेवा, श्रम ।।
नहि त लागत अगडाही कि ।
मधेशके विर सिपाही छि ।।

यदि नहि देव हक प्यारसँ ।
त लेव हम हथियारसँ ।।
दुश्मनक लेल कसाई छि ।
मधेशके विर सिपाही छि ।।

# हम मधेशी

○ प्रकाश

हमहुँ मधेशी, तहुँ मधेशी ।
मधेशमे जे छै सब मधेशी ।।
मुदा एकताके अभावमें ।
कोय एमाले, कोय काग्रेसी ।।
अहि मधेशमें हमर घर छै ।
तोरो घर छौ, सबहक घर छै ।।
मुदा हार्दिकताके नाममें ।
एक-दोसरसँ त्रास आ डर छै ।
देशके समस्त आवादीमें ।
छी मेचीसँ महांकालीमें ।।
मुदा समानताके नाममें ।
टकरावके जहर छै ।।
जनयुद्धके हम साथी छि ।
पिछडल छि, देहाती छि ।।
मुदा अधिकारके नाममें ।
नागरिक नै, निवासी छि ।।
जनआन्दोलनमें साथ छि ।
सहलौ लाठी, गोलिक बर्षात भी ।।
मुदा न्यायाके नाम पर ।
भरहल भारी पक्षपात ई ।।
एकात्मक शासन व्यवस्थामें ।
सहलौ बहुत उपेक्षा ने ।।
मुदा एकनो मात्र आशमें ।
हक भेटत छि विश्वासमें ।।
हमरो वातपर करु विचार ।
नीति निर्माणक ई आधार ।।
स्नातक सँ कम नै ।
संविधान सभाके उम्मेदवार ।।

# माँ मधेश मागै बलिदान

○ ध्रुव

इनकलाब बोल जिन्दाबाद ।
पहाडे शासन मुर्दाबाद ।।
बिर मधेशी नवजवान ।
माँ मधेश मागै बलिदान ।।

लहुसँ लथपथ मधेश ।
बिर सहिद बाजै रमेश ।।
न्योछावर कर देटा प्राण ।
माँ मधेश मागै बलिदान ।।

एखन मागैं छि मात्र मधेश ।
बादमें लेबौ हम तिबु प्रदेश ।।
लडबौ हम खुनि संग्राम ।
माँ मधेश मागै बलिदान ।।

दान नहि, चाही छि अधिकार ।
मधेश प्रान्त, मधेश सरकार ।।
नहि त लडबौ अन्तिम संग्राम ।।
माँ मधेश मागै बलिदान ।।

हमरा चाही आजाद मधेश ।
अपन भाषा अपन भेष ।।
धोती, कुर्ता चाही पहिचान ।
माँ मधेश मागै बलिदान ।।

अपना लेल पठेलौ प्रतिनिधी ।
जान लेलक केलक बेमानी ।।
बनु नहि मधेशीके दलाल ।
माँ मधेश मागै बलिदान ।।

# जय मधेश मायके

○ ध्रुव

उठु मधेशी जागु यौ ।
तोडी गुलामी भागु यौ ।।
अंत करु अन्याय के ।
जय मधेश मायके ।।

मधेशी मधेशी एक ।
बहु भाषा भाषी भेष ।।
पुकार भाय-भायके ।
जय मधेश मायके ।।

सदीयौं के सत्ताधारी ।
भ्रष्ट शासक पहाडी ।।
बुझलक पराय के ।
जय मधेश मायके ।।

नातावादी नेता नीति ।
जाधरी रहत प्रवृति ।।
देश हुक्त खायके ।
जय मधेश मायके ।।

सदीयौं सँ शोषित छि ।
सुविधासँ बंचित छि ।।
खोजै छि हक न्यायके ।
जय मधेश मायके ।।

हम बहुत सहलौं ।
मुदा कुछ नै कहलौं ।।
नै सहबै कसायके ।
जय मधेश मायके ।।

रोटी नै, छै लंगोटी नै ।
रोगीक भेटै गोटी नै ।।
कुत्ता चाटै मलायके ।
जय मधेश मायके ।।

# बुलन्द करू

○ प्रकाश

मधेशक जन्मल सन्तान ।
पहिने तुँ मधेशी जान ।।
वादमे केकरो हितोषी कहु ।
मधेशक आवाज बुलन्द करु ।।

हम मधेशी आ ई हमर मधेश ।
आव कुछो नै वचत शेष ।।
त्याग नै आव बलिदान करु ।
मधेशक आवाज बुलन्द करु ।।

ई आन्दोलन केकरा लेल ।
मधेश और मधेशीक लेल ।।
यौ शिखरमें पुगत मधेशी विर सपुत ।
मधेशक आवाज बुलन्द करु ।।

यौ हमरा पुछु ई कोन आन्दोलन ।
अहौ चलु ई छि मधेश चक्रव्युह ।।
हकक लेल अतिम लडाइ लडु ।
मधेशक आवाज बुलन्द करु ।।

मधेशीक अपन बहुत शक्ति ।
आब नै करवै पहाडी भक्ति ।।
नै त देशमें मचत क्रान्ति कहु ।
मधेशक आवाज बुलन्द करु ।।

३८ वर्षक पहाडी शासन ।
कतौ न मधेशीक प्रशासन ।।
वर्ग युगक उद्घोष करु ।
मधेशक आवाज बुलन्द करु ।।

यौ मधेशी आब नै ताकु ।
प्रान्तिय सरकार घोषित करु ।।
तव पहाडी शासनक अन्त चलु ।
मधेशक आवाज बुलन्द करु ।।

# जय मधेश

○ धुन

मधेश कहि, कहि तराई ।
मधेशी-मधेशी भाइ-भाइ ।।
भेदभाव रहित इर्ष्या द्वेष ।
जय मधेश जय मधेश ।।

राणा, पंच, शाह तिनु काल ।
मुठी भरके रहल नेपाल ।।
बिर्ता छुटै तराई प्रदेश ।
जय मधेश जय मधेश ।।

आधा धर्ती आधा आकाश ।
मधेशी चाहै सबमें पचास ।।
माँग नहि चाहि फाँट हरेक ।
जय मधेश जय मधेश ।।

नहि चाही हीरा, नहि चाही टोपी ।
नहि चाही भाषा नेपाली पोथी ।।
अपन भाषा अपन भेष ।
जय मधेश जय मधेश ।।

डाँफे राष्ट्रिय चिडै कोना भेल ।
नहि देखली रुप न सुन्ली बोल ।।
राष्ट्र करु चिडै निरपेक्ष ।
जय मधेश जय मधेश ।।

स्वशासन चाही स्व-सरकार ।
अलगसँ चाही कारोबार ।।
मधेशीक आखिरी संदेश ।
जय मधेश जय मधेश ।।

मधेशी चाहै निरपेक्ष मधेश ।
स्वायत शासन स्वतन्त्र देश ।।
राजा जनक, विराट, सलहेश ।
जय मधेश जय मधेश ।।

# स्वतन्त्र मधेश

○ ध्रुव

पृथ्वीनारायण गोरखाली राजा ।
मधेशक सत्रु पहाडी जा-जा ।।
नहि चाहि हमरा गोराके राज ।
मधेशी चाहै मधेश स्वराज ।।

बहुत पिलक खुन इन्सानी ।
आव नहि सहवै धोखा, वेमानी ।।
खाल खिचक नुन छिटलक ।
जान मालक पिट-पिटक ।।

तिरहुतिया सेना तिरहुत राज ।
कहै उठ युवा मधेशी राज ।।
खेत खलिहानसँ दही आवाज ।
बचतौ नहि आव मधेशक लाज ।।

मधेशीया चाहै स्वतन्त्र मधेश ।
समग्र मधेश एक प्रदेश ।।
सबमें चाही समान अधिकार ।
संसद सेना आओर सरकार ।।

# बुलन्द करू अपन आवाज

○ ध्रुव

रतिभरि बहि सोचलक मधेशक हित ।
पैसा खातिर बिकमेल पतित ।।
आब नहि रहत मातृभूमिक लाज ।
बुलन्द करू अपन आवाज ।।

कती रहु बनिक रहु इन्साब ।
आबो हक लिय सबमें समाब ।।
शिक्षा, न्याय आओर इलाज ।
बुलन्द करू अपन आवाज ।।

क्रान्तिक ज्वाला फुटी गेल ।
टुटल समाज जुटी गेल ।।
आब छिन लेब इ ताज ।
बुलन्द करू अपन आवाज ।।

बहि चाहि सामन्ति सरकार ।
जे मचेलक खुब खराब ।।
आब बन्द हो इ दबाब ।
बहि चाही मोराक राज ।।

अन्तरिम संविधान धोखा ।
खुब लेलक मधेशीक बेटा ।।
नहि सहब इ अलगाव ।
फोड़ब देब मधेशी राज ।।

हम मधेशी इ हमर स्वराज ।
हम सबमें हो मित्रता सद्भाव ।।
बिन छिनने नहि देत मधेश राज ।
बुलन्द करू अपन आवाज ।।

# मधेशके आव समहारत के ?

○ ध्रुव

एक सय चारि वरिषक राणा ।
मोज मस्ति केलक मनमाना ।।
दमन विरोधमे वाजत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

वतिस बरिष पंचायत रहल ।
शाही सत्ता निरंकुश छल ।।
हुकुमके तह लगायत के?
मधेशके आव समहारत के ?

बाइ वरिस बहुदल रहल ।
छिना झपटीमें विफल ।।
तैं समाजवादके बाधक के ?
मधेशके आव समहारत के ?

दश वरिष त जनयद्धो भेल ।
राजतन्त्रो भेल सदाके लेल ।।
प्रभुत्वसँ राष्ट्र बचायत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

मधेश आन्दोलन सेहो भेल ।
जान देलक पहचानक लेल ।।
मधेशीयाके ललकारत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

मधेश आन्दोलन लेलक उवाल ।
गोली खेलक मधेशक लाल ।।
तै खुनके मुल्य चुकायत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

संविधान सभा निर्वाचन भेल ।
मधेश, मधेशीया स्थापित भेल ।।
हक के बात उठावत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

महा मतलबी मधेशी नेता ।
एकरा चाही कुर्सी हमेसा ।।
माँ मधेशके लाज बचावत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

बी फुट डालिक शासन कर ।
सदा सँ रहल पहाडी स्वर ।।
मधेशी कहिके पुकारत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

मधेशी नेता बनिगेल सास ।
आव एकरासँ बे राखी आस ।।
सासँ आस धिक्कारत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

हे विनित मजदुर किसानोसँ ।
उठु-उठु खेत खलिहानोसँ ।।
नेताके चालि सुधारत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

जागु जागु युवा शक्ति जागु ।
हर बन्धन तोडीके भागु-आगु ।।
हर जुल्म सँ टकरावत के ?
मधेशके आव समहारत के ?

# आजादी चाही

○ ध्रुव

कहियो मवेशी, कहियो मधेशी ।
हक माँगलो कहलक विदेशी ।।
एखन कहै अपराधी यौ ।
आजादी चाही, आजादी यौ ।।
सबमें चाही समान फाँट ।
नहि त करबौ किता काट ।।
हम मधेशी वागी यौ ।
आजादी चाही, आजादी यौ ।।
आजादी नै त किछु नै ।
अधिकार चाही भिख नै ।।
अतिम लहु लडाई यौ ।
आजादी चाही, आजादी यौ ।।
बंश छि हम अंश लेव ।
सिंह दरबार पर्यन्त लेव ।।
चाहि सबमे आधी यौ ।
आजादी चाही, आजादी यौ ।।
मधेशी छि मुदा बेपाली ।
नै छि खस, नै गोरखाली ।।
मधेशी मधेशवादी यौ ।
आजादी चाही, आजादी यौ ।।
पहाड बाजै, बाजै मधेश ।
आव बाजै छै पुरे देश ।।
उठु युवा शक्तिशाली यौ ।
आजादी चाही, आजादी यौ ।।
मांग त सबटा जायजे छै ।
पहडीया दाजुभाइ कहै ।।
नियतमें छै कारी यौ ।
आजादी चाही, आजादी यौ ।।

# मायक नोर

○ ध्रुव

हमर नेपाल रगतसँ लाल ।
घायल तराई, पहाड, हिमाल ।।
भय आ त्रास वढल चहुओर ।
मायक नोर कहै आव छोड ।।
डगमग-डगमग डोलै देश ।
आ थरथर कामै तिनु प्रदेश ।।
बर्षल मौतक वर्षा घनघोर ।
मायक नोर कहै आव छोड ।।
हमर धरती हमर आकाश ।
स्थिर छल, शांत,छल साफ ।।
हमरा बाँध्न छल दोस्तिक डोर ।
मायक नोर कहै आव छोड ।।
यत जत देखै ततै उजाड ।
हत्या, हिंसाक उमडल वाइढ ।।
माँग उजडल मायक गोद ।
मायक नोर कहै आव छोड ।।
जय जननी, जय हे मातृभुमी ।
हम थिक बेटा तोहर वैमुनी ।।
कोय कानै साँझ, कोय भोर ।
मायक नोर कहै आव छोड ।।
विधवा माँगै आ टुगर पुकारै ।
आ कोय निर्दोष सजा पावै ।।
हम माता विन्ती करी कल जोड ।
मायक नोर कहै आव छोड ।।
जन्म देल तु जीवन हे माता ।
तोहर छै खुन सँ नाता ।।
मुदा तोहर हम बेटा कठोर ।
मायक नोर कहै आव छोड ।।

# कवि परिचय

हमर नाम छि ध्रुव-प्रकाश ।
राजविराज छै हमर निवास ।।
सुनरी-युमेश्वर के सन्तान ।
कुपही हमर छै जन्मस्थान ।।
पूज्य पितामह श्री छठुलाल ।
हुनके छि इ चारु लाल ।।
अदम्य साहसी पौरखीशील ।
नाजे, युगे, विशे, अनिल ।।
मैयाँ हमर सगुनियाँ छल ।
बहुत वडा लछमिनियाँ छल ।।
अभाव, दमन आ भक्ति अन्ध ।
हुनके कृपा कटल सब फन्द ।।
गाम पर घर नै, वाधमे खेत ।
घर छल गरिवीके चपेट ।।
तै पर छलै जातिय अन्याय ।
मैयाँ-वावा कहै हाय ! हाय !
मुदा जब जन्मल हिनक चारु लाल ।
सब मिल जागल, भागल काल ।।
'दुम' दवौलक कुकुर सन ।
द्रोही, डाही भागल दुश्मन ।।

देशमे लागल अगडाही छल ।
मधेशमे लागल पसाही छल ।।
आन्दोलनमें सहभागी छि ।
अन्याय विरुद्ध सिपाही छि ।।
हमर कविता, हमर किताब ।
देश मधेश दुनुके याद ।।
ने काँग्रेस ने कम्युनिष्टवाद ।
आजादी चाहै छि रहि आजाद ।।
कविता हमर सदेश छि ।
मधेशी सम्पूर्ण मधेश छि ।।
हमर माँग छै एके उद्देश्य ।
'समग्र मधेश एक प्रदेश' ।।
कुल देवताक जपि हम नाम ।
कल जोडीक करी प्रणाम ।।
इएह हमर इतिहास छि ।
छोट छिन हमर प्रयास छि ।।

*आजादी नै त किछ नै ।*
*अधिकार चाहि भिख नै ।।*
*अतिम लडु लडाइ यौ ।*
*आजादि चाहि आजादि यौ ।।*

-ध्रुव

मुद्रक:- उषा अफसेट प्रेस, राजविराज, फोन- ०३१-५२०४८६